ओ३म्

**-महर्षि दयानन्द के अज्ञात व अनूठे अनुयायी-**

# 'श्री चण्डी प्रसाद शर्मा (ममगांई)'

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

सन् 1930 में उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल में जन्में 83 वर्षीय श्री चण्डी प्रसाद शर्मा (ममगांई) महर्षि दयानन्द सरस्वती को सर्वश्रेष्ठ मानकर अपने दैनन्दिन जीवन में उनकी मान्यताओं व सिद्धान्तों का आचरण करते हैं। पत्नी 53 वर्ष तक साथ रही। आर्य समाज के विद्वान पुरोहित विद्याभास्कर शास्त्री ने आपका विवाह संस्कार कराया था। अब वह अकेले एक छोटे भवन या कुटिया में निवास करते हैं जिसका नाम उन्होंने गुजरात भवन रखा है। वह कहते हैं कि मेरा अधिकांश जीवन गुजरात में व्यतीत हुआ है, अतः निवास का नाम 'गुजरात भवन' रखना सार्थक है। प्रत्येक दिन वह सत्यार्थ प्रकाश का पाठ करते हैं व इस ग्रन्थ को संसार का सबसे महवपूर्ण ग्रन्थ मानते हैं। आपने स्वामी विद्यानन्द सरस्वती तथा पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय के प्रायः सभी ग्रन्थों को पढ़ा है। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के ''तत्वमसि'' व उनके अनेक ग्रन्थों की उन्होंने प्रशंसा की। आर्यसमाज विद्वान संन्यासी स्वामी आत्मानन्द सरस्वती के आर्य समाज को योगदान को भी आपने कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया और उन्हें आर्य समाज का सच्चा सेवक व योग्य विद्वान बताया। वह अपने जीवन के बारे में दावा करते हैं कि उन्होंने कभी कोई असत्य, कुकर्म, भ्रष्टाचार या अनाचार का कार्य नहीं किया। अर्थ शुचिता के नियमों का भी उन्होंने जीवन में पूर्णतः पालन किया है। **अपने वैराग्य भाव, जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति एवं विद्या-व्यसनी होने के कारण उन्होंने 19 बार नौकरी छोड़ी।** जो धन उन्होंने अर्जित किया वह मात्र जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति क लिए ही अर्जित किया। वह बताते हैं कि पौड़ी गढ़वाल में सन् 1940-44 व उससे पूर्व बहुत अधिक निर्धनता थी। दूर-2 तक विद्यालय भी नहीं होते थे। इसलिए उन्होंने अध्ययन व आजीविका के लिए 14 वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया था और देहरादून आ गये थे। **आपकी माता ने बचपन में आपको सीख दी थी कि विद्यार्जन से बढ़कर जीवन में कुछ नहीं है।** इस विचार व माता की सलाह एवं आज्ञा ने जीवन में सदा उनका मार्ग दर्शन किया। सुख-सुविधापूर्ण जीवन के लिए धनोपार्जन इनके जीवन का उद्देश्य कभी न बन सका। विवाह से पूर्व ही अपनी होने वाली धर्म-पत्नी को अपनी इन भावनाओं के बारे में आपने बता दिया था। गृहस्थ जीवन में पत्नी से इन्हें पूर्ण सहयोग मिला। तीन पुत्र व एक पुत्री सहित इनकी चार सन्ताने हैं। यह सभी देहरादून में टाईटन रोड, मोहब्बेवाला में गोल मार्केट के निकट रहते हैं। यहां खुली भूमि में तीनों पुत्रों के अलग-अलग निवास बने हुए हैं। **इनकी कुटिया या निवास पृथक है जहां यह सन्ध्या, हवन, स्वाध्याय व ध्यान का अभ्यास करते हुए अपना समय व्यतीत कर रहे हैं।** इनकी पुत्री का निवास भी पास में ही है। आप बताते हैं कि आपको मृत्यु के डर ने कभी नहीं सताया। आपका तो मानना है कि यदि किसी भी कारण से मृत्यु हो जाती है तो यह उनके लिए अच्छा ही होगा। इससे उन्हें नया जन्म जल्दी मिलेगा व और भी अनेक लाभ होगें। यह भी आपने बताया कि ईश्वर की आप पर विशेष कृपा रही है और उसने अनेक बार मार्ग दर्शन किया जिससे वह संसारी चकाचौंध से दूर रहे और स्वाध्याय, चिन्तन व ईश्वर के ध्यान में समय व्यतीत किया। आप कहते हैं कि मैं हमेशा अपने घर से दूर रहा, मुझे कोई परिचित देखने वाला नहीं था, मैं बिगड़ भी सकता था, परन्तु मुझ पर ईश्वर की कृपा ही मुख्य रही जिससे मैं आत्मोथान के कार्यों में ही लगा रहा।

**महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज की विचारधारा, मान्यताओं व सिद्धान्तों में पूर्ण आस्था व विश्वास होने पर भी आप किसी आर्य समाज के सदस्य कभी नहीं रहे। देहरादून में किसी आर्य समाज के अधिकारी या सदस्य से आपका कोई परिचय नहीं है।** हमने यहां के आर्य नेताओं के बारे में यह अनुभव किया है कि वह चाहते भी नहीं हैं कि आर्य समाज के सदस्यों की वृद्धि हो। उनके द्वारा ऐसा प्रचार भी नहीं देखा जिससे लगे कि वह सदस्यों विशेषतः युवाओं की संख्या में वृद्धि करना चाहते हैं। युवा प्रायः किसी आर्य समाज में दिखाई ही नहीं देते। यदि इक्का दुक्का कहीं युवा दिखाई दें भी तो स्वाध्यायशील युवाओं व पदाधिकारियों का मिलना सम्भव नहीं प्रतीत होता। विगत रविवार 18 मई, 2014 को गुरूकुल के एक आचार्यजी का फोन आया कि हम आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में क्यों नहीं आये। हमने बताया कि हमें वार्षिकोत्सव की सूचना कहीं से भी अब तक नहीं है। यद्यपि आर्य समाज के अधिकारी हमें जानते हैं परन्तु इससे उनकी प्रवृति का सहज अनुमान होता है। ऐसे नेता आर्य समाज के प्रशंसकों को ढूंढ कर उन्हें समाज में आने का न्योता देगें, की कोई सम्भावना नजर नहीं आती। ***हमने अनुभव किया कि श्री चण्डी प्रसाद शर्मा आर्य समाज की मान्यताओं व सिद्धान्तों के मूर्तरूप हैं।*** स्वामी सत्यपति जी व उनके कार्यों के आप प्रशंसक हैं। महर्षि दयानन्द प्रदत्त सन्ध्या व यज्ञ की पद्धति का आप दैनन्दिन जीवन में पूर्ण निर्वाह करते हैं एवं एकाकी साधानारत हैं। हम उनसे मिलने गुरूकुल, पौन्धा, देहरादून के आचार्य डा. धनन्जय आर्य के साथ अपरान्ह 2:45 बजे पहुंचे थे। उनसे लगभग 1:30 घण्टे वार्तालाप किया। उनके कक्ष के बराण्डे में यज्ञकुण्ड व समिधायें देखकर हमें अतीव प्रसन्नता हुई।

लगभग 14 वर्ष की अवस्था में वह पौड़ी से देहरादून आये थे। यहां उन्हें एक युवक हर्षलाल भारती मिले। वह आर्य समाज से परिचित थे। उन्होंने मूर्तिपूजा एवं अनेक पाखण्डों के बारे में उन्हें महर्षि दयानन्द के मन्तव्य बताये और महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की चर्चा की और बताया कि सभी शंकाओं के निवारण के लिए इस ग्रन्थ को पढ़ो। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त किया और उसके अध्ययन में संलग्न हुए। खण्डन उन्हें रूचिकर प्रतीत नहीं हुआ अतः उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन बन्द कर दिया। देहरादून से वह पंजाब गये। वहां पुनः उन्हें श्री हर्ष लाल भारती के शब्द स्मृति में आते रहे। उन्होंने पुनः सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त किया। इस बार अविद्या, अज्ञान, कुरीति व

अवैदिक मान्यताओं के खण्डन से उन पर विपरीत प्रभाव न होकर सकारात्मक प्रभाव हुआ। उन्होंने पूरा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ डाला और वह इस ग्रन्थ के प्रशंसक बन गये। उन्होंने अनुभव किया कि इस ग्रन्थ का प्रत्येक शब्द मानवजाति के सुधार के लिए आवश्यक है। अब उनकी आर्य समाज व वैदिक साहित्य में प्रवृति बढ़ गई और वह आर्य समाज के मुख्य-मुख्य सभी ग्रन्थों को खरीदने और पढ़ने लगे। धीरे-धीरे नियमित व अधिक से अधिक स्वाध्याय करना उनका स्वभाव ही बन गया और उन्होंने आर्य समाज के सभी प्रमुख व आवश्यक ग्रन्थ पढ़ डाले। अब उनकी जीवन शैली भी आर्य जीवन शैली में बदल गई। वार्तालाप में उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने जीवन में जितना धन कमाया उसका लगभग 40 प्रतिशत भाग पुस्तकों को खरीदनें में व्यय किया। आप मुख्यतः एक शिक्षक रहे हैं। पहले लम्बे समय तक आप गुजरात में रहे और वहां अध्यापन कराते रहे और उसके बाद मुम्बई में कई वर्ष तक वहां तत्वदर्शी विद्यापीठ में भिन्न-2 मतों व धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन व अन्य विषय पढ़ाते रहे। आपके शिष्यों में गुजरात के ही अधिक विद्यार्थी प्रायः अध्ययन किया करते थे। इनके अनेक शिष्य विदेश में रहते हैं। कईयों का आपसे सम्बन्ध बना हुआ है। सभी आर्थिक दृष्टि से समृद्ध है। यदा कदा कुछ शिष्य आकर आपसे भेंट किया करते हैं।

श्री शर्मा जी बताते हैं कि एक बार संन्यास का निश्चय लेकर वह उत्तराखण्ड के पहाड़ों की ओर निकल पड़े। आगे बढ़ रहे थे कि मार्ग में एक सज्जन मिल गये। उन्होंने आपसे पूछा कि वह कहां जा रहे हैं। उन्होंने उन्हें अपने संन्यास का निश्चय बता दिया। वह सज्जन बोले कि अभी संन्यास न लें व शिक्षण का काम करें। इससे हमारी दिशा बदल गई। उस परामर्श के बाद का जीवन उनकी सलाह से बदला हुआ जीवन है। सन्यास जीवन आते-आते रह गया और वह एक शिक्षक बन गये। इस पर भी उनका जीवन कुछ-कुछ एक सन्यासी के जीवन के ही समान रहा है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको अनेक अनुभव हुए। आपने नये प्रयोग किए। आप अपने भूतकाल व वर्तमान ाल के जीवन से पूर्ण सन्तुष्ट हैं।

श्री चण्डीप्रसाद शर्मा देहरादून में रहते हैं। देहरादून में 15 के लगभग आर्य समाज मन्दिर हैं। वह किसी समाज के सदस्य नहीं हैं। कही सत्संग आदि में नहीं जाते हैं। उन्हें आर्य समाज का कोई अधिकारी व सदस्य जानता भी नहीं है। एक घटना हमारे जीवन में घटी थी

मन मोहन आर्य

जिस कारण हम विगत 20 वर्षों से उनसे मिलना चाहते थे। श्री शर्माजी का एक लेख वेदवाणी के ऋषि जन्म-स्थान पर प्रकाशित हुआ था। श्री शर्माजी का एक अनुसंधानपूर्ण लेख इस पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। पत्रिका में प्रकाशित लेख व पता देखकर हमने शर्माजी को पत्र लिखा कि हम आपसे मिलना चाहते हैं, आप कृपया अपने घर पहुंचने का मार्ग दर्शन कर दें। आपका उत्तर आ गया। हम एक मित्र के साथ जाना चाहते थे परन्तु कई कारणों से जा न सके। बाद में उस मित्र की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई और हमारा विचार विस्मृति में चला गया। कभी-2 स्मृति हो जाती थी। अभी कुछ माह पहले हमारा एक लेख एक आर्य पत्रिका में हमारे मोबाइल नम्बर सहित छपा। शर्माजी इस पत्रिका के सदस्य हैं। देहरादून का होने के कारण आपने हमें फोन किया और लेख की प्रशंसा की। हमने फिर विस्तृत पता पूछा, उनका फोन नम्बर नोट कर लिया जिसका परिणाम कि कल हम उनके निवास पर पहुंच गये और उनसे वार्तालाप किया। इस भेंट में हमें ईश्वर की प्रेरणा व अपना प्रारब्ध भी दृष्टिगोचर होता है क्योंकि उनके दर्शन व वार्तालाप कर जिस प्रसन्नता व सन्तोष का अनुभव हमें हुआ वह प्रसन्नता व सन्तोष किसी अन्य नये व्यक्ति से मिलकर कभी अनुभव नहीं होता। हम उनसे वार्तालाप करके हतप्रभ हो रहे थे। इसका कारण उनमें महर्षि दयानन्द के प्रति उच्च पवित्र भक्तियुक्त भावनायें और उनके सभी सिद्धान्तो का उनके आचरण में होना है।

हमने श्री शर्माजी को ऐसा व्यक्ति पाया जो मन, वचन व कर्म से महर्षि दयानन्द व आर्य समाज का दृण अनुरागी व प्रशंसक है। उनका अपना जीवन आर्य समाज की मान्यताओं के सर्वथा अनुकूल है। उन्होंने अपना सारा जीवन तो महर्षि दयानन्द, आर्य समाज के विद्वानों व अन्य प्रमुख लेखकों के महत्वपूर्ण ग्रन्थों के अध्ययन में व्यतीत किया ही, अब भी एक सच्चे आर्य का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हम आर्य समाज के यशस्वती नेताओं व सुधी पाठकों से अनुरोध करते है कि इस लेख को प्रकाशित कर श्री शर्माजी को सम्मान दें। यही एक छोटा सा उनका अभिनन्दन होगा। इस भेंट में डा. धनजंय आर्य, गुरूकुल पौंधा हमारे साथ थे। उन्होंने उनसे गुरूकुल में अध्ययनरत 70-80 विद्यार्थियों को भिन्न-2 विषयों पर अपने ज्ञान व अनुभव से लाभान्वित करने का अनुरोध किया। शर्माजी ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर किया। चलने से पूर्व उन्होंने आचार्यजी को 500 रूपये गुरूकुल आदि कार्यों में सहयोग के लिए स्वेच्छा व आग्रहपूर्वक भेंट किये।

श्री चण्डी प्रसाद शर्मा से मिलकर अपने अनुभव किया कि वह एक ऋषिभक्त, आर्यसमाज के प्रेमी, अर्थशुचिता-धारक, एक आचारवान विद्वान, श्रेष्ठ व त्यागपूवक जीवन व्यतीत करने वाले, मन-वचन व कर्म से एक, आज की संवादक्रान्ति के युग में भी आर्यों के लिए अज्ञात, महापुरूषों के गुणों के धारक एक असाधारण पुरूष हैं। हम आर्यों से निवेदन करेगें कि वह उन्हें उनके मोबाइल फोन संख्या 09456636878 पर सम्पर्क कर उनसे संक्षिप्त वार्तालाप करें और उन्हें अपनी ओर से शुभकामनायें देते हुए उन्हें अधिकाधिक अपने अनुभव लिखकर प्रकाशित करने की प्रेरणा व निवेदन करें।

**-मनमोहन कुमार आर्य**
**196 चुक्खूवाला-2**
**देहरादून-248001**
**फोनः 09412985121**